अध्याय प्रथम

# प्रस्तावना

# प्रस्तावना

शिक्षा की औपचारिक व्यवस्था के साथ-साथ अनौपचारिक शिक्षा भी देश में प्रारम्भ की गयी। देश की बढ़ती हुई छात्रों और शिक्षकों की संख्या को देखते हुये दूर-शिक्षा की भी व्यवस्था हुई। इसके माध्यम से शिक्षक की सम्मुख उपस्थिति के अभाव में विद्यार्थी की शिक्षा उपलब्ध होने लगी। यह एक बहु-माध्यमी एवं बहु-आयामी शिक्षा व्यवस्था के रुप में उभर कर आयी। इससे विद्यार्थी अपनी गति और क्षमता से स्वतंत्र रुप से विभिन्न माध्यमों के द्वारा अधिगम प्राप्त करने लगा।

इसकी आवश्यकता को समझते हुये देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों ने पत्राचार पाठ्यक्रम प्रारम्भ किये। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली ने शिक्षकों के लिये ग्रीष्मलीन बी. एड. पत्राचार पाठ्यक्रम क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों के माध्यम से प्रारम्भ किया था, जो कुछ वर्षो तक चला और बाद में बंद कर दिया गया। इसी प्रकार दूर-शिक्षा का उपयोग बैंकों, जीवन बीमा निगम और कृषि क्षेत्रों में किया जाने लगा। वर्तमान में दूर - शिक्षा के माध्यम से छात्र-छात्रायें एवं शिक्षक काफी संख्या में लाभान्वित हो रहे हैं।

दूर - शिक्षा ने मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष एवं क्रिया को प्रभावित किया है। शिक्षण की प्रक्रिया में शैक्षिक मशीनों, रेडियो, टेलीविजन, टेपरिकार्डर, कम्प्यूटर तथा भाषा प्रयोगशाला आदि का प्रयोग किया जाने लगा । इससे शिक्षण प्रक्रिया में परिवर्तन आया है। मशीनों के प्रयोग से एक शिक्षक बड़े से बड़े छात्र - समूह को अपने ज्ञान और कौशल से लाभान्वित कर सकता है। इस दिशा में विज्ञान और तकनीकी का बड़ा योगदान है। अधिगम-परिस्थितियों में वैज्ञानिक प्रक्रिया का विनियोग - शिक्षा तकनीकी के माध्यम से हो रहा है। इन आविष्कारों का शिक्षा प्रक्रिया में प्रयोग से शिक्षण विधियों को एक नई दिशा मिली है।

टेलीविजन और रेडियो के माध्यम से छात्र-छात्राओं और शिक्षकों के लिये विभिन्न प्रकार के शैक्षिक कार्यक्रम प्रसारित किये जाने लगे। जिसका फायदा इन्हें मिला तो परन्तु बहुत कम व्यक्तियों को। टेलीविजन तो दूर-दराज के इलाकों में विशेषकर छात्र-छात्राओं के घर में बहुत कम संख्या में उपलब्ध है। अतः वे इनका लाभ नहीं उठा पाते और जिनके घर में है वे इन कार्यक्रमों के प्रति रुचि नहीं लेते। रेडियो एक ऐसा तकनीकी माध्यम है जो सस्ता और सर्वसुलभ है। शिक्षा के क्षेत्र में रेडियो की भूमिका को निम्नलिखित बिन्दुओं में दिया जा रहा है:

(1) रेडियो द्वारा किसी घटना की जानकारी उसके घटित होने के तुरन्त बाद ही दी जा सकती हैं तथा घटना, तथ्य, पाठ वास्तविक प्रतीत होते हैं।
(2) इसके द्वारा हर स्तर पर शैक्षिक कार्यक्रम आसानी से प्रसारित किये जा सकते है।
(3) यह उपयुक्त एवं उच्च स्तर की कविताओं, नाटकों को प्रस्तुत कर विद्यार्थियों को बोध अनुभव एवं समाजिकता की शिक्षा एवं विद्यार्थियों के सामने कल्पनात्मक संसार प्रस्तुत करता है।
(4) यह अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान करता है।
(5) इससे सृजनात्मकता का बोध होता है।
(6) इसके द्वारा संगीत शिक्षा को उन विद्यालयों तक पहुंचाया जा सकता है जहां संगीत शिक्षा न दी जाती हो।
(7) यह समय व स्थान की बचत करता है।
(8) इससे होने वाले शैक्षिक प्रसारण, शिक्षक वर्ग की कमी को पूर्ण करता है।
(9) विद्यार्थियों की आयु, कक्षा को ध्यान में रखकर विभिन्न विषयों को रेडियो के माध्यम से प्रस्तुत किया जा सकता है।
(10) किसी शिक्षा-शास्त्री द्वारा प्रस्तुत की गयी परिचर्चा उनके ज्ञान, अनुभव के प्रतीक बनकर श्रोताओं को महत्वपूर्ण विषय-वस्तु प्रदान करती है।
(11) इसके द्वारा प्रसिद्ध व्यक्तियों की पुस्तकों का नाटकीकरण कर प्रस्तुत किया जा सकता है।
(12) इसकी मरम्मत सस्ती एवं सरलता से हो सकती है।

(13) विद्यार्थियों के लिये यह सहायक सामग्री प्रस्तुत करता है, जिससे अधिगम अधिक प्रभावशाली हो जाता है।

(14) इतिहास, भूगोल एवं विदेशी भाषाओं की शिक्षा के लिये रेडियो एक सशक्त एवं प्रभावशाली माध्यम है।

## 1.1 मध्यप्रदेश में शैक्षिक प्रसारण–कार्यक्रम

छात्रीय प्रसारण कार्यक्रम आकाशवाणी, नई दिल्ली से सन् 1964 में प्रसारित होता था। इसका मुख्य उद्येश्य उन कक्षाओं के लिये था जहां पर विषय के योग्य व प्रशिक्षित शिक्षक नहीं थे या फिर शिक्षकों का अभाव था। इस प्रकार एक योग्य शिक्षक का लाभ अनेक बच्चों को मिल रहा था। धीरे–धीरे इस कार्यक्रम की उपयोगिता देखकर इसे समस्त प्रदेशों के आकाशवाणी केन्द्र प्रसारित करने लगे।

मध्यप्रदेश में छात्रीय कार्यक्रम प्रतिदिन शाला लगने के दिनों में 9.15 से 9.35 प्रात: प्रसारित होता था और 1.40 से 2.00 बजे दोपहर इसे पुन: प्रसारित किया जाता था। यह कार्यक्रम जुलाई से प्रारम्भ होकर फरवरी तक प्रसारित होता रहता था। इन कार्यक्रमों में मुख्य रुप से राष्ट्रीय एकता के गीत, सामान्य ज्ञान एवं विभिन्न विषयों के प्रमुख पाठों का प्रसारण होता था। साथ ही प्राथमिक शिक्षकों के लिये विशेष कार्यक्रम प्रसारित हुआ करते थे।

प्रसारण के विषय, तिथि, प्रसारण बिन्दुओं का चयन और आलेख लेखन का प्रशिक्षण राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, भोपाल द्वारा किया जाता था। आलेख लेखन कार्य आकाशवाणी के माँध्यम से होता था। यह कार्यक्रम सन् 1997–98 तक चलता रहा जिसका समस्त व्यय भारत सरकार उठाती थी। जब से (1998) प्रसार भारती अस्तित्व में आई, उनके नियमों में परिवर्तन आया और जिसमें प्रावधान रखा गया कि संबंधित विभाग ही इसका व्यय उठाये। अत: आकाशवाणी से प्रसारित होने वाले सभी कार्यक्रमों पर पुनर्विचार होना प्रारंभ हो गया। जुलाई 1998 के प्रथम सप्ताह में श्री रवीन्द्र मालव, अपर संचालक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, भोपाल एवं

Regional Institute of Education LIBRARY

डॉक्टर श्रीधर, निदेशक, आकाशवाणी, भोपाल की नए शैक्षिक कार्यक्रमों को प्रसारित करने हेतु एक बैठक हुई। इस बैठक में विभिन्न प्रकार के मुद्दों पर विचार - विमर्श हुआ। इनमें से कुछ प्रमुख बिन्दु जो प्रकाश में आये वे इस प्रकार थे:

(1) शाला प्रसारण कार्यक्रम दोपहर में होने से उसे छात्र सुन नहीं पाते अत: इसके समय में परिवर्तन किया जाये।
(2) शालाओं में रेडियो तो है परन्तु कार्यशील नहीं है या जहां पर है स्थानाभाव के कारण सभी छात्रों को सुनाया नहीं जा सकता । यह कार्यक्रम सीधे पाठ्य पुस्तकों पर आधारित थे और यह रुचिकर नहीं होते थे। अत: इन बिन्दुओं पर विचार विमर्श होने के पश्चात् यह तय हुआ कि दो कार्यक्रम प्रारंभ किये जायें:

(!) शैक्षिक संवाद कार्यक्रम - प्राथमिक शिक्षकों के लिये।
(!!) अनुगूंज कार्यक्रम - कक्षा 3 से 8 के बालक-बालिकाओं के लिये।

## 12 शैक्षिक संवाद कार्यक्रम

प्राथमिक शिक्षकों के लिये यह कार्यक्रम प्रति गुरुवार के दिन आकाशवाणी केन्द्र भोपाल से 3 बजे से 4 बजे अपरान्ह प्रसारित होता है। इसमें प्राथमिक शिक्षा से संबधित पाठ्यक्रम के प्रमुख विषयों पर कार्यक्रम प्रसारित किये जाते हैं।

इसमें पहले विषय से संबंधित प्रश्न उत्तर के माध्यम से जानकारी दी जाती है, तत्पश्चात् श्रोताओं से प्रश्न आमंत्रित किये जाते हैं जिनका समाधान आकाशवाणी केन्द्र में बैठे विशेषज्ञों के द्वारा किया जाता है। इस प्रकार पूर्व में यह एक-पक्षीय श्रव्य कार्यक्रम है तो दूसरी तरफ यह द्विपक्षीय सम्प्रेषण कार्यक्रम का रुप धारण कर लेता है। इसकी प्रमुख विशेषता है कि श्रोताओं की शंका का समाधान त्वरित कर दिया जाता है जिससे उनमें कार्यक्रम के प्रति रुचि और प्रेरणा दोनों ही बने रहते है। इसके साथ ही साथ म.प्र. राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद के अधिकारी संस्थान से सम्बन्धित विशेष सूचना भी शिक्षकों एवं

अधिकारियों को इसी के माध्यम से देते रहते है। गुरुवार का दिन एवं समय का निर्धारण इसलिये किया गया है क्योंकि इस दिन इस समय ब्लॉक स्त्रोत केन्द्रों (बी.आर.सी.) पर बैठक आयोजित होती है और इसका लाभ बैठक में उपस्थित शिक्षक एवं प्रशिक्षक दोनों को ही मिलता है।

## 1 3 अनुगूंज कार्यक्रम

यह कार्यक्रम म.प्र. राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् के मीडिया सेन्टर के सहयोग से आकाशवाणी द्वारा विकसित दैनिक शैक्षिक कार्यक्रम है। यह कार्यक्रम प्रतिदिन सांयकाल 6.15 से 6.35 बजे तक आकाशवाणी, भोपाल और इन्दौर से प्रसारित होता था। बाद में इसे प्रदेश के अन्य केन्द्रों रायपुर, ग्वालियर, जबलपुर से भी प्रसारित किया जाने लगा।

## 1.4 कार्यक्रम के प्रमुख आकर्षण

**इस कार्यक्रम के प्रमुख आकर्षण निम्नलिखित है:**

(1) हंसते-खेलते, गाते-गुनगुनाते हुये सीखने-सिखाने का कार्यक्रम
(2) छोटे-बड़े बच्चों के लिये गीत-संगीत, नाटक, कहानी, कविता, व्यंग्य-विनोद, पहेलियां, प्रश्न और उत्तर व अन्य विविध इन्द्रधनुषी रंगों से सजा मनमोहक कार्यक्रम
(3) मनोरंजन और शिक्षा से ओत-प्रोत सभी विषयों पर महत्वपूर्ण जानकारियों सहित कार्यक्रम
(4) हर कार्यक्रम के बाद है, कुछ प्रश्न और प्रश्नों के सही जवाब देने पर मिलेंगे प्रोत्साहन एवं
(5) भोपाल, जबलपुर, इन्दौर, ग्वालियर और रायपुर केन्द्रों पर तैयार, विभिन्न विषयों पर रंगारंग कार्यक्रम।

## 15 कार्यक्रम की रुप रेखा

अनुगूंज कार्यक्रम की रुपरेखा बनाने के लिये अगस्त 1998 में एक आलेख लेखन पर तीन दिवसीय कार्यशाला क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल में आयोजित की गयी थी जिसमें अगस्त, सितम्बर व अक्टूबर 1998 में प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों की तिथियां तथा विषय निश्चित किये गये थे।जिसकी सूची परिशिष्ट 'अ' में दी गयी है।

अनुगूंज कार्यक्रम का सम्पूर्ण नियन्त्रण परिषद स्तर पर ही होता है। सुविधा के लिये सभी संबधित जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों में एक माध्यम समन्वय समिति गठित की गयी है। इसमें शिक्षा महाविद्यालयों के प्रशिक्षक भी शामिल हैं जो स्थानीय आकाशवाणी केन्द्रों के साथ समन्वय का कार्य करती हैं। आलेख प्रसारण के पूर्व यह समिति सुनिश्चित कर लेती है कि इसमें कोई विषयगत् त्रुटि तो नहीं रह गयी है।वर्तमान में विभिन्न आकाशवाणियों से निम्नलिखित विषयों का प्रसारण किया जा रहा है:

| | | |
|---|---|---|
| आकाशवाणी भोपाल | --- | सामान्य विज्ञान |
| आकाशवाणी इन्दौर | --- | विज्ञान |
| आकाशवाणी रायपुर | --- | भाषा |
| आकाशवाणी ग्वालियर | --- | सामान्य ज्ञान |
| आकाशवाणी जबलपुर | --- | सामाजिक विज्ञान / भाषा |

नवम्बर 1998 से फरवरी 1999 तक के लिये अगामी कार्यक्रम हेतु सभी प्रदेश के आकाशवाणी केन्द्रों पर दो दिवसीय कार्यशालायें आयोजित की गयी थीं जिसमें आलेखों के लेखन-सम्पादन कार्यो को अंतिम रुप देने के साथ-साथ तिथियां भी सुनिश्चित की गयी थी। इसमें पांचों समन्वय समितियों की भागीदारी महत्वपूर्ण है। आगामी कार्यक्रम नवम्बर 1998 से फरवरी 1999 तक आकाशवाणी म.प्र. के सभी केन्द्रों से प्रसारित दैनिक शैक्षिक कार्यक्रमों की सूची परिशिष्ट 'ब' में दी गयी है।

अभी तक भोपाल आकाशवाणी से प्रसारित कार्यक्रम की प्रतिक्रिया के रुप में लगभग 200 पत्र छात्रों, शिक्षकों, अभिभावकों एव शिक्षा विशेषज्ञों के म.प्र. राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् में आ

चुके हैं। सही उत्तर भेजने वाले बच्चों के लिये परिषद् द्वारा कुछ पुरुस्कार एवं प्रमाण-पत्र देने की योजना है। समयाभाव के कारण परिषद् के अधिकारी इस दिशा में अब प्रारम्भिक कार्यवाही में लगे हुये है। अधिकांश पत्र दूर-दराज के ग्रामीण अंचलों एवं कस्बों से प्राप्त हुये हैं जबकि शहरी क्षेत्रों से गिनती नगण्य है।

रेडियो माध्यम से प्रसारित होने वाले पाठ अल्पव्ययी है और अधिक सख्या में इसका प्रसारण किया जा रहा है परन्तु इसका कितना लाभ बालकों एवं शिक्षकों को मिल पा रहा है इस पर बिना किसी अध्ययन के कह पाना कठिन है। अत: शोधकर्ती आकाशवाणी से अनुगूंज कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रसारित पाठों की प्रभाविता को जानने के लिये उत्सुक हुयी और इसीलिये, इस विषय पर लघु-शोध करने का विचार किया।

उपर्युक्त कार्यक्रम की प्रभाविता देखने के लिये शोधकर्ती ने जिस समस्या का चयन किया है उसे निम्नांकित प्रकार से शब्दांकित किया गया है:

"प्राथमिक स्तर पर आकाशवाणी द्वारा प्रसारित रेडियो पाठों की प्रभाविता का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन"

## 1.6 शोध के उद्देश्य

(1) रेडियो पाठों के प्रसारण से प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों पर पड़ने वाले प्रभावों को ज्ञात करना,
(2) प्राथमिक शिक्षकों से रेडियो पाठों के प्रसारण की प्रभाविता का अभिमत ज्ञात कर उनका विश्लेषण करना,
(3) विशेषज्ञों के अभिमत के आधार पर प्रसारित रेडियो पाठों की प्रभाविता का विश्लेषण करना एवं
(4) रेडियो पाठों के प्रसारण में आने वाली कठिनाईयों एवं कमियों को ज्ञात कर उपयुक्त हेतु सुझाव देना।

## 1.7 चर

प्रस्तुत शोध में स्वतंत्र चर रेडियो पाठों का प्रसारण है तथा आश्रित चर विद्यार्थी वर्ग है जिन पर रेडियो पाठ का प्रभाव देखना है।

## 1 8 शोध का सीमांकन

उपर्युक्त शोध का सीमांकन इस प्रकार किया गया है

(1) जिन बालक-बालिकाओं ने अनुगूंज कार्यक्रम के अंतर्गत प्रसारित पाठों को सुना है, उन्हीं को इस शोध कार्य में शामिल किया गया है।

(2) जिन शिक्षकों एवं विशेषज्ञों ने अपने पत्र अनुगूंज कार्यक्रम के संदर्भ में लिखे हैं, उन्हें इस शोध कार्य में शामिल किया गया है।

(3) इस शोध कार्य में केवल आकाशवाणी, भोपाल से प्रसारित होने वाले पाठों की प्रभाविता का ही विश्लेषण किया गया है।

## 1.9 मान्यतायें

इस शोध कार्य की निम्नलिखित मान्यतायें है:

(1) जो बालक-बालिकायें रेडियो पाठों को सुनते है उससे उनके ज्ञान में वृद्धि होती है।

(2) जो विषय कक्षा में विद्यार्थी समझ नहीं पाते वे रेडियो प्रसारित पाठों के माध्यम से अच्छी प्रकार समझ जाते है।

(3) जो शिक्षक इन पाठों को सुनते है उनमें शैक्षिक नवाचारों के प्रति रुझान पैदा होता है।